

तथा हिन्दू धर्म के अन्य तीज-त्योहारों पर भी दर्शनार्थियों की भारी भीड़ उमड़ पड़ती है। महन्त श्री ने बड़ती जिम्मेदारियों के साथ दोनों मंदिरों का सन्तुलित विकास करते हुए जनसेवा में भी कभी कोई कमी नहीं आने दी है।

इस समय अखिल भारतीय कल्लाजी सम्प्रदाय के राष्ट्रीय आचार्य के पद पर सुशोभित महन्त श्री भीमसिंहजी चौहान शोहरत के सरपट भागते घोड़े पर सवार होकर भी अपनी जड़ों से हमेशा-हमेशा जुड़े रहे हैं और इसी का प्रमाण है कि सन् 2007 में उन्होंने अपने पिताजी स्व. श्री लक्ष्मणसिंहजी चौहान की स्मृतियों को कालजीवी बनाए रखने की मंशा से श्री काली कल्याण धाम वरदा में पितृदेव मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्यतिथ्य आयोजन रखा। 28 अप्रैल से 30 अप्रैल तक के इस विराट धर्मोत्सव में एक बार फिर से वागड, मेवाड, मारवाड, मालवा, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली और उत्तरप्रदेश सहित देशभर के कल्याण भक्तों का समागम हुआ तथा हजारों श्रद्धालुओं की साक्षी में विशाल शोभायात्रा, गंगाजल कलश यात्रा, यज्ञ, हवन और वैदिक मंत्रोच्चारों के बीच मुख्य मंदिर के ठीक दायें तरफ स्थापित पितृदेव की छतरी में महन्तजी के करकमलों से अपने पिताजी स्व. श्री लक्ष्मणसिंहजी चौहान की आकर्षक प्रतिमा स्थापित हुई।

इस पावन अवसर पर महन्त श्री भीमसिंहजी चौहान के शरीर में कल्लाजी का आह्वान हुआ और महन्तजी के छोटे पुत्र श्री चन्द्रवीरसिंह चौहान का इस गद्दी परम्परा के अगले गद्दीपति के रूप में राजतिलक किया गया एवं उसी क्षण केशरियाकुँवर की कृपादृष्टि से महन्तजी के सात वर्षीय पुत्र व श्री काली कल्याण धाम के अगले उत्तराधिकारी श्री चन्द्रवीरसिंह के शरीर में कल्लाजी के भाव प्रकट हुए। तब इस ऐतिहासिक क्षण के गवाह बने सेकड़ों कल्याण धाम भक्तों ने बालकुँवर का दर्शन लाभ लिया। वर्तमान में श्री काली कल्याण धाम वरदा में शनिवार व रविवार के अलावा कल्याण जयन्ती, गोगानवमी, नवरात्री, महाशिवरात्री, हनुमान जयंती, श्रावण मास, पाटोत्सव (5 जनवरी), गुरुपूर्णिमा एवं महन्तजी के जन्मदिन (5 नवम्बर) सहित वर्षपर्यन्त विभिन्न अनुष्ठान होते रहते हैं तथा यहाँ पर आने वाला हर श्रद्धालु इस धाम की मदमस्त फिजों पर फीदा होकर इस बात को सच्ची श्रद्धा से

स्वीकार करता है कि महन्त श्री भीमसिंहजी चौहान ने अपने अथाक प्रयासों के बूते श्री काली कल्याण धाम, वरदा और श्री काली कल्याण धाम, उदयपुर को एक महातीर्थ के माफिक विकसित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। फिर सच भी यही है कि उन्होंने अपना सर्वस्व श्री केशरियाकुँवर को अर्पित करते हुए इन दोनों मंदिरों को लोक तुभावे दर्शनीय स्थल के रूप में स्थापित किया है, जिस की यशगाथा को किंवदन्ति शब्दों के साँचे में पिरोना संभव नहीं है।

इन दोनों मंदिरों के अलावा महन्तजी द्वारा स्थापित श्री काली कल्याण शिक्षण संस्थान, वरदा (पंजि.) से सम्बद्ध कल्याण विद्या विहार, वरदा की सम्पूर्ण देखरेख भी वे स्वयं ही करते हैं। साथ ही सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय के भाव से उन्होंने प्रादेशिक स्तर पर जनकल्याण से सम्बन्धित समस्त प्रकार की गतिविधियों के संचालन हेतु “श्री काली कल्याण मानव सेवा एवं विकास संस्थान वरदा” (पंजि.) की स्थापना भी की है, जो महन्त श्री के मार्गदर्शन में सतत रूप से सेवा एवं विकास के कार्यों में सक्रिय है। इस बाबत महन्तजी ने बताया कि “निकट भविष्य में संस्कार और संस्कृति के उन्नयन के लक्ष्य से एक वेद विद्यापीठ एवं बेसहारा, निर्धन व बुजुर्गों की सेवार्थ वृद्धाश्रम स्थापित करना उनकी प्राथमिक योजनाओं में है। साथ ही स्वास्थ्य के उद्देश्य से एक गौशाला निःशुल्क शिविरों के आयोजन करने, पशुसेवा के उद्देश्य से एक गौशाला खोलने और सेवा से सम्बन्धित अन्य विविध योजनाओं के उचित क्रियान्वयन के लिए ही उन्होंने श्री काली कल्याण मानव सेवा एवं विकास संस्थान, वरदा की स्थापना की है।”